प्रसार पुस्तिका संख्या:- DEE/2021/18

पशुओं में लंगड़ा बुखार

बिहार पशु विज्ञान
विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES
UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

पशुओं में लंगड़ा बुखार

परिचय

- लंगड़ा बुखार गाय में होने वाली एक महत्वपुर्ण जीवाणु जनित रोग है।
- वर्षा ऋतु में इस बिमारी के ज्यादातर मामले सामने आते हैं। यह बहुत तीव्र रूप में भी पाया जाता है जिसमें मृत्यु दर काफी ज्यादा होती है।

रोगजनकता

- लंगड़ा बुखार क्लोसट्रिडियमचोवियाई नामक जीवाणु द्वारा होता है।
- ये बीजाणु जमीन में सालो–साल जीवित रहते हैं और अनुकुल अवसर पाकर गायों को अपना निशाना बनाते हैं। त्वचा के कटने–फटने या घाव के रास्ते जब यह जीवाणु मांसपेशियों तक पहुँच जाता है तब ''लंगड़ाबुखार'' के लक्षण दिखाई देते हैं।
- यह बिमारी मुख्यतः गायों में देखने को मिलती है परन्तु बकरी, भेड़ आदि जानवर भी इससे प्रभावित हो सकते हैं।
- समान्य तौर पर यह जीवाणु हाथ एवं पैर की मांसपेशियों का प्रभावित करता है।
- सभी उम्र और नस्ल के गाय इससे प्रभावित होते हैं पर 4–24 महीने उम्र के जानवरों में यह संक्रमण ज्यादा देखने को मिलता है।
- मजबुत कद–काठी के पशु जिनकी मांसपेशियाँ ज्यादा विकसित हो, वैसे जानवरों के इस बिमारी से प्रभावित होने की संभावना ज्यादा होती है।

लंगड़ा बुखार के लक्षण

- इस बिमारी से प्रभावित पशुओं को प्रारंभ में काफी तीव्र बुखार 106°–108° फारेनहाईट होता हैं।
- पैर में कड़ापन आने की वजह से पशु लंगड़ाने लगता है।
- मांस पेशियों में सुजन आने लगता है जो शुरूआत में गर्म मालुम पड़ता है और जिसको दबाने पर पशु दर्द महशुष करते हैं।
- बाद में सुजन दर्द रहित और ठंढा हो जाता है।
- मांशपेशियों के बीच हवा जमा होने लगती है जो दबाने पर स्पंज जैसा मालुम पड़ता है और साथ में एक खास तरह की ''चटचटाहट'' की आवाज सुनाई देती है।
- तापमान में गिरावट आती है और बिमारी के लक्षण दिखने के 12–48 घंटे के बाद पशु की मृत्यु हो जाती है।

लंगड़ा बुखार से बचाव

- यह बिमारी संक्रमित भुमि जिसमें काफी मात्रा में ''क्लोस्ट्रीडियमचोविआई'' के जीवाणु हों, से फेलती है।
- लंगड़ा बुखार से मरे जानवरों को जला देना चाहिए या जमीन के काफी अन्दर दबा देना चाहिए ताकि भूमि को संक्रमित होने से बचाया जा सके।
- संक्रमित भुमि पर जानवरों को चरने नहीं देना चाहिए।
- इस बिमारी से बचाव के लिए प्रभावी टीका उपलब्ध है। अतः बरसात के मौसम से पूर्व लंगड़ा बुखार का टीका अवश्य लगवाना चाहिए।

- बिमारी के लक्षणों के प्रतीत होने के शुरूआती दौर में ही उपयुक्त एण्टीवायोटिक का इस्तेमाल कर लाभाकारी असर प्राप्त किय जा सकता है ।अतः अविलम्ब पशुचिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।

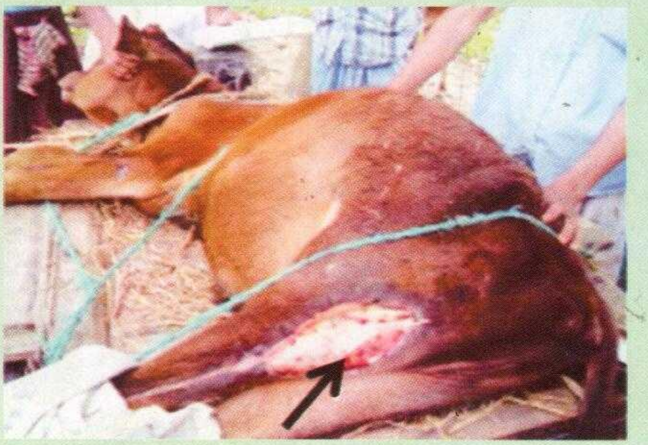

आलेख एवं प्रस्तुतिकरण:- सरोज कुमार रजक एवं पंकज कुमार

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-
निदेशक,प्रसार शिक्षा
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14
Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in
Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021   Printed Under - SC -PLAN